कामकाजी महिलाओं की वर्तमान सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अध्ययन करना (सीतामढ़ी के संदर्भ में)

अर्चना कुमारी

शोधार्थी

गृहविज्ञान विभाग, ल.ना.मि.वि.वि.कामेश्वरनगर दरभंगा-बिहार,

सार

प्रस्तुत शोध कामकाजी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, घर और काम के बीच संतुलन बनाने में आने वाली समस्याओं का निवारण किस तरह की नीतियां द्वारा किया जाय जिससे अधिक से अधिक महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकें। यह शोध समस्तीपुर जिले में राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर सरकार की प्रभावी रणनीतियों को बनाने एवं लागू करने में मदद करेगें जो महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने के लिए मुख्य रुप से आवश्यक हैं उद्देश्यपूर्ण विधि का उपयोग करते हुए अध्ययन क्षेत्र जिला सीतामढ़ी का चुनाव किया गया है। इसमें दो उद्देश्यों पर चर्चा की गयी है-पहला कामकाजी महिलाओं के जनसांख्यिकीय चरों की पहचान करना। दूसरा कामकाजी महिलाओं के कार्य व व्यक्तिव के प्रति समाज के दृष्टिकोण का मूल्यांकन करना ।अध्ययन क्षेत्र सीतामढी जिले से 50 कामकाजी महिलाओं का चयन किया गया है।इनकी आयु 25-55 वर्ष है। साक्षात्कार में शिक्षित कामकाजी एवं अशिक्षित दोनो वर्ग की कामकाजी महिलाओं को सम्मिलित किया गया। निष्कर्ष से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति अभी भी संतोषजनक नहीं है।

मुख्य बिंदू -: कामकाजी महिला, सामाजिक स्थिति,आर्थिक स्थिति ।

परिचय

स्त्रियाँ ईश्वर की बनायी एक ऐसी सुंदरतम् कृति है जो अपने वर्तमान और भविष्य को अपने परिवार और अपने समाज के उत्थान के लिए समर्पित करती हैं। भारतीय संस्कृति में स्त्रियाँ सौंदर्य, शुभता और समृद्धि का प्रतीक हैं और उन्हें 'शक्ति का स्रोत' और 'भविष्य की आशा' के रूप में पूजा जाता है। इसलिए किसी राष्ट्र की समृद्धि और विकास उसकी महिलाओं के विकास पर निर्भर करता है। महिलाऐं जनसंख्या का लगभग आधा हिस्सा हैं जो शेष आबादी के विकास को विभिन्न तरीकों से प्रभावित करती हैं। परंपरागत रूप से भारत में महिलाओं को माँ, बहन और पत्नी के रूप में सम्मान दिया जाता है,और वे प्रेम, स्नेह, देखभाल और साझेदारी की प्रतिमूर्ति हैं। लेकिन समय के साथ, सांस्कृतिक परिवर्तन यानी आधुनिकीकरण के साथ, उनके प्रति यह सम्मानजनक रवैया और समाज में उनकी स्थिति धीरे-धीरे बदल रही है। पर्यावरणीय स्थिति में बदलाव के साथ वे भेदभाव का शिकार हो रही हैं। इतिहास में झांके तो पता चलता है कि भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं की भूमिका सदियों से परिवर्तनशील रही है। घरेलू महिलाओं की तुलना में कामकाजी महिलाओं को अलग तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। कार्य के साथ-साथ घर के काम एवं बच्चों को संभालना समय का प्रबंधन करना, एवं अन्य जिम्मेदारियों को भी देखना है। इसके अलावा कामकाजी महिलाएं कपड़े धोना, खाना बनाना, घर की साफ- सफ़ाई करना, बच्चों की देखभाल करना,परिजनों की हर जरूरत को पूरा करना। घर में कामकाजी महिलाओं का योगदान घरेलु महिलाओं की अपेक्षा अधिक होता है।

वर्मा(2025) ने अपने शोध पत्र "भारत में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति:समस्या व समाधान" के निष्कर्ष में पाया की " भारत में महिलाओं का इतिहास हमेशा से उतार-चढ़ाव से भरा रहा है। कुछ समय में महिलाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, लेकिन कई युगों में उन्हें आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा है। भारत में महिलाओं के लिए आजीविका का काम करना चुनौतीपूर्ण होता है। नारीवादी विचारकों के अनुसार, परिवार में स्त्री और पुरुष समान होते हैं, लेकिन कार्य विभाजन में लैंगिक असमानताएँ और सामाजिक बाधाएँ होती हैं।अलग-अलग हिस्सों में महिलाओं की भागीदारी दर भिन्न है। असंगठित क्षेत्रों में महिलाएं अधिक संख्या में काम कर रही हैं। भारत की श्रमशक्ति में महिलाएं एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, लेकिन वे पुरुषों की तुलना में रोजगार और गुणवत्ता के मामले में पीछे हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, महिला श्रमिकों की संख्या कुल महिलाओं का 25.6 प्रतिशत है। अधिकांश महिला श्रमिक ग्रामीण क्षेत्रों में रहती हैं, जहां 87 प्रतिशत खेतिहर मजदूर हैं। शहरी क्षेत्रों में, महिलाएं घरेलू उद्योग, छोटे व्यवसाय और भवन निर्माण जैसे काम कर रही हैं।सरकार की नीतियों का मुख्य उद्देश्य महिला श्रमिकों की समस्याओं को दूर करना, वेतन और कार्य स्थिति में सुधार लाना, और उन्हें बेहतर रोजगार के अवसर प्रदान करना है।"

कुमारी और कुमारी (2024) ने अपने शोध पत्र "वर्तमान में वैज्ञानिक महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन" के निष्कर्ष में पाया की "इस शोधपत्र का उद्देश्य महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का अध्ययन और विश्लेषण करना है।आपदा के अनुसार 2022.23 में महिला श्रम बल भागीदारी दर 37% तक बढ़ी। जो 2017.18 में 23% थी। उच्च शिक्षा में महिलाओं का नाम भी उल्लेखनीय

रूप से बढ़ाया गया है। एक ओरे वे अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर ओरे ट्रस्ट भी अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर रहे हैं। हालाँकि, यौन उत्पीड़न और घरेलू हिंसा जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि सरकारी मान्यता और मंजूरी में महिलाओं की स्थिति में सुधार किया गया है, लेकिन समग्र समानता के लिए पुरुषों और महिलाओं के बीच सहयोग और समन्वय की आवश्यकता है।"

वर्मा (2025) ने अपने शोध पत्र "भारत में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति समस्या व समाधान" में पाया की "19वीं शताब्दी की शुरुआत से, हिंदू समाज में महिलाओं के अधिकारों की बढ़ती मांग और उनके शोषण के खिलाफ आवाज उठाने का क्रम शुरू हुआ। दिशा में महत्वपूर्ण बदलाव आया और महिलाओं ने स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। इससे उन्हें आत्मबल और एक नई जागरूकता मिली, जो बाद में उनकी प्रगति की नींव बनी। इसके फलस्वरूप कई महिला संगठनों, जैसे-महिलाओं की भारतीय समिति और भारतीय स्त्री मंडल का गठन हुआ। 1950 में नए संविधान ने महिलाओं और पुरुषों को समान अधिकार दिए गये और सामाजिक समानता को मूल अधिकार माना इससे महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ। परिणामस्वरुप वे लोकतांत्रिक समाज में अपनी पहचान बनाने लगीं। अब वे पुरुषों के साथ रोजगार और उत्पादन दोनों क्षेत्रों में काम करने लगी हैं। महिलाओं का घर के बाहर जाकर काम करने की अवधारणा 1940 के दशक में शुरू हुई। जब यह माना जाता था कि महिलाओं को घर में रहना चाहिए। सातवें दशक के मध्य में, शहरी मध्यवर्गीय महिलाओं ने कार्यालयों में काम करना शुरू किया। विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, और सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण कार्यस्थल पर महिलाओं की संख्या में भिन्नता है, खासकर असंगठित क्षेत्रों में उनकी संख्या अधिक होने के बाद भी काम करना चुनौतीपूर्ण होता जा रहा है।"

कुमारी एवं कुमारी (2024)ने अपने शोध पत्र "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अध्ययन" में पाया गया कि "स्वतंत्रता के बाद से किए गए सरकारी प्रयासों के परिणामस्वरूप महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ है। फिर भी परंपरा से आधुनिकता की ओर इस परिवर्तन के दौरान पुरुष और महिला को मिलकर कुछ मानक स्थापित करने होंगे जिससे महिलाओं की आर्थिक और सामाजिक सशक्तता सार्थक हो सके। स्रोतों के अनुसार- 2022-23 में महिला श्रम बल भागीदारी दर 37% तक बढ़ गई है, जो 2017-18 में 23% थी। उच्च शिक्षा में महिलाओं का नामांकन भी उल्लेखनीय रूप से बढ़ा है। एक ओर वे अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो रही हैं तो वहीं दूसरी ओर कार्यस्थल पर भी अपनी प्रतिष्ठा स्थापित कर रही हैं। हालांकि यौन उत्पीड़न और घरेलू हिंसा जैसी चुनौतियाँ अभी भी बनी हुई हैं।"

उद्देश्य

- कामकाजी महिलाओं के जनसांख्यिकीय चरों की पहचान करना ।
- कामकाजी महिलाओं के सामाजिक व आर्थिक स्थिति के प्रति समाज एवं परिवार सकारात्मक एवं नकारात्मक दृष्टिकोण का अध्ययन ।

अध्ययन का महत्व

भारत जैसे विकासशील देश में महिलाओं की भूमिका सदियों से परिवर्तनशील रही है। प्राचीन काल में महिलाओं को सम्मान व स्वतंत्रता प्राप्त तो थी। किंतु मध्यकाल में सामाजिक-धार्मिक रूढ़ियों के कारण उनकी स्थिति सीमित होती गई। आधुनिक भारत में शिक्षा एवं रोजगार के अवसरों और संवैधानिक अधिकारों ने महिलाओं को फिर से मुख्य धारा में लाया है। भारत में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के साथ-साथ महिलाओं की कार्यक्षेत्र में भागीदारी लगातार बढ़ रही है। परंतु इसके साथ कई चुनौतियाँ जैसे- लैंगिक असमानता, वेतन-भेदभाव, सुरक्षा-समस्याएँ, पारिवारिक-दबाव और सांस्कृतिक प्रतिबंध भी विद्यमान हैं। यह शोधपत्र कामकाजी महिलाओं की वर्तमान सामाजिक और आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करता है तथा उनके अनुभवों, बाधाओं, अवसरों और नीतिगत आवश्यकताओं पर प्रकाश डालता है।

अध्ययन की आवश्यकता

प्रस्तुत शोध कामकाजी महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति, घर और काम के बीच संतुलन बनाने में आने वाली समस्याओं का निवारण करने के लिए किस प्रकार की नीति अपनायी जाये जिससे अधिक से अधिक महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकें। यह शोध समस्तीपुर जिले में राष्ट्रीय एवं स्थानीय स्तर पर सरकार की प्रभावी रणनीतियों को बनाने एवं लागू करने में मदद करेगें जो महिलाओं के जीवन स्तर को सुधारने के लिए मुख्य रुप से आवश्यक हैं

शोध पद्धति

उद्देश्यपूर्ण विधि का उपयोग करते हुए अध्ययन क्षेत्र जिला सीतामढ़ी का चुनाव किया गया है। शोध की प्रकृति वर्णानात्मक पद्धति है। अध्ययन क्षेत्र से 50 कामकाजी महिलाओं का चयन किया गया है। इनकी आयु 25-55 वर्ष है। साक्षात्कार में शिक्षित कामकाजी एवं अशिक्षित दोनो वर्ग की कामकाजी महिलाओं को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोत का उपयोग आकड़ों के संग्रहण के लिए किया गया है। प्रश्नावली एवं अवलोकन विधि की सहायता से शोध से संबंधित जानकारी एकत्र की गयी है। तथ्यों का संग्रह करने के बाद संकेतन, वर्गीकरण सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु आवृत्ति एवं प्रतिशत आदि विधियों का उपयोग किया गया तथा तालिका और ग्राफ के माध्यम से प्रस्तुत किया गया।

परिणाम और चर्चा

उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय चरों से सम्बंन्धित जानकारी

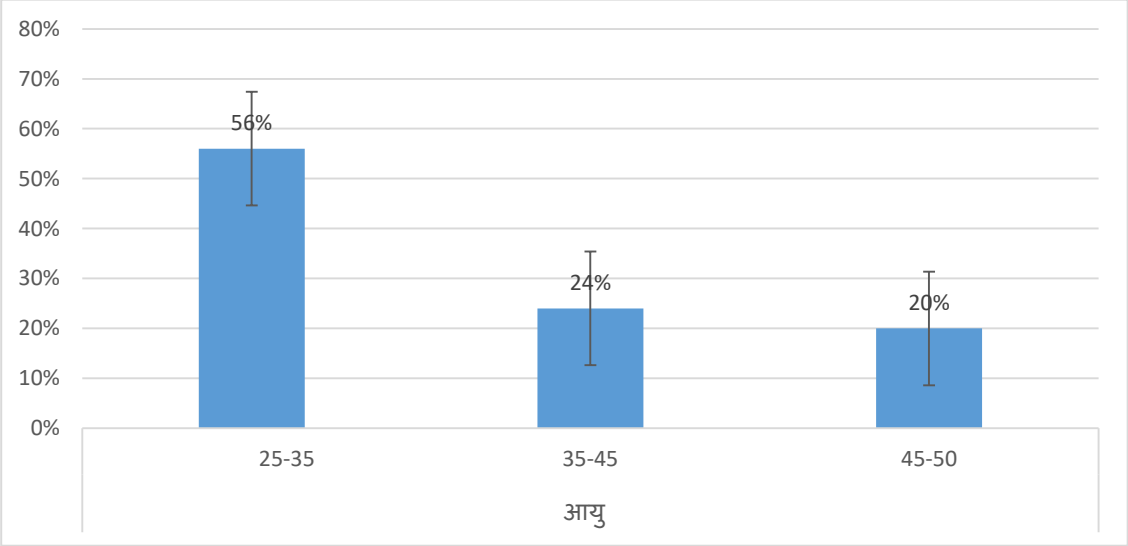

चित्र सं0 01- उत्तरदाताओं की आयु से सम्बन्धित जानकारी

उपरोक्त चित्र संख्या 01- से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सबसे अधिक 56 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता 25-35 आयु वर्ग के थे, दूसरे स्थान पर 24 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता 35-45 आयु के हैं और तीसरे स्थान पर 20 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता 35-45 आयु के हैं।

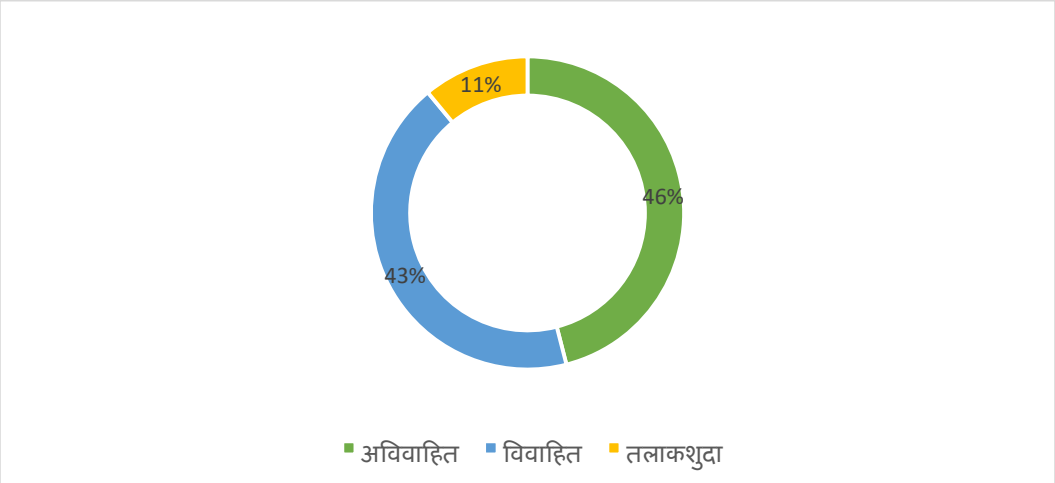

चित्र सं0 02- उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति से सम्बन्धित जानकारी

उपरोक्त चित्र संख्या 02- उन कामकाजी महिलाओं के वितरण को दर्शाती है जो अविवाहित, विवाहित, तलाकशुदा थी। इसमें सबसे अधिक 46% अविवाहित, उससे कम **43%** विवाहित और सबसे कम **11%** तलाकशुदा साक्षात्कार शामिल थी

उत्तरदाताओं की समाजिक एवं आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित जानकारी

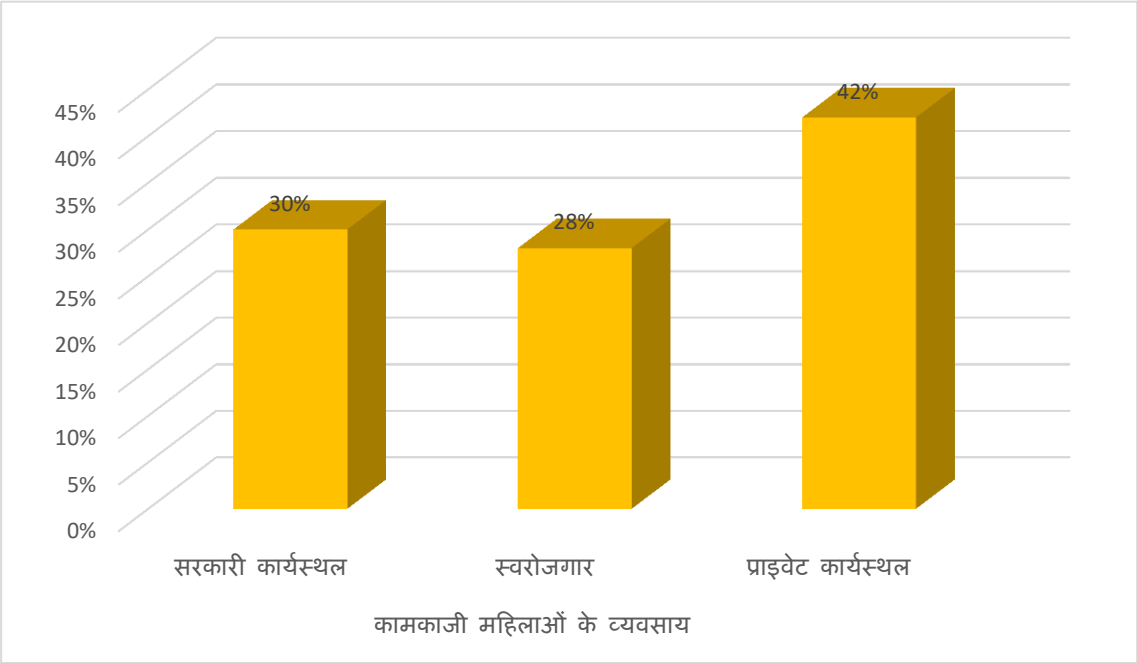

चित्र सं0 03- उत्तरदाताओं के व्यवसाय से सम्बन्धित जानकारी

उपरोक्त चित्र संख्या 03- उन कामकाजी महिलाओं के वितरण को प्रदर्शित करती है जो विभिन्न व्यवसायों में कार्यरत है। जिसमें सवसे अधिक 42% प्राइवेट सस्थानो में कार्यरत है।

28 वर्षीय एक कामकाजी महिला उत्तरदाता का कहना था कि वे सबसे पहले सरकारी सस्थानों में नौकरी पाने का प्रयास करती है क्योंकि सरकारी सस्थानों में कार्य करने से समाज में अत्यधिक सम्मान मिलता है जबकि प्राइवेट सस्थानों में कार्य करने से अधिकांशत: समाज और परिवार के लोगों को लगता है कि हम लोगों काम के बहाने घूमने का अवसर ढुढ़ती है। इतना ही कार्यस्थल पर लैंगिंक भेदभाव जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

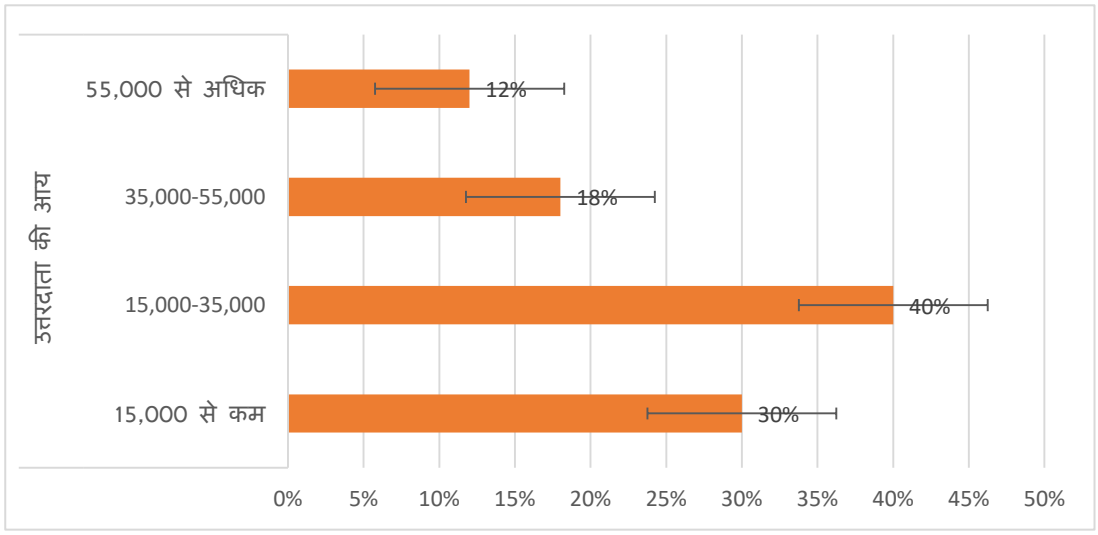

चित्र सं0 04- उत्तरदाताओं की आय से सम्बन्धित जानकारी

उपरोक्त चित्र संख्या 04- से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सबसे अधिक 40 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता की आय 15,000-35,000 प्रतिमाह थी, दूसरे स्थान पर 30 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता 15000 से कम प्रतिमाह थी उससे कम 18 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता 35000-55000 प्रतिमाह थी और सबसे कम 12 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता 55,000 से अधिक प्रतिमाह थी।

30 वर्षीय एक कामकाजी महिला उत्तरदाता जो 45,000 प्रतिमाह की सैलरी पाती है का कहना था कि नौकरी करने के बावजूद घर के अधिकांश निर्णय घर की बड़ी महिलाएं या पुरुष ही लेते है। जबकी आय का अधिकांश भाग वो परिवार की जरुरतों को पूरा करने में खर्च कर देती है।

चित्र सं0 05- क्या आप अपनी आय इच्छानुसार व्यय करती है

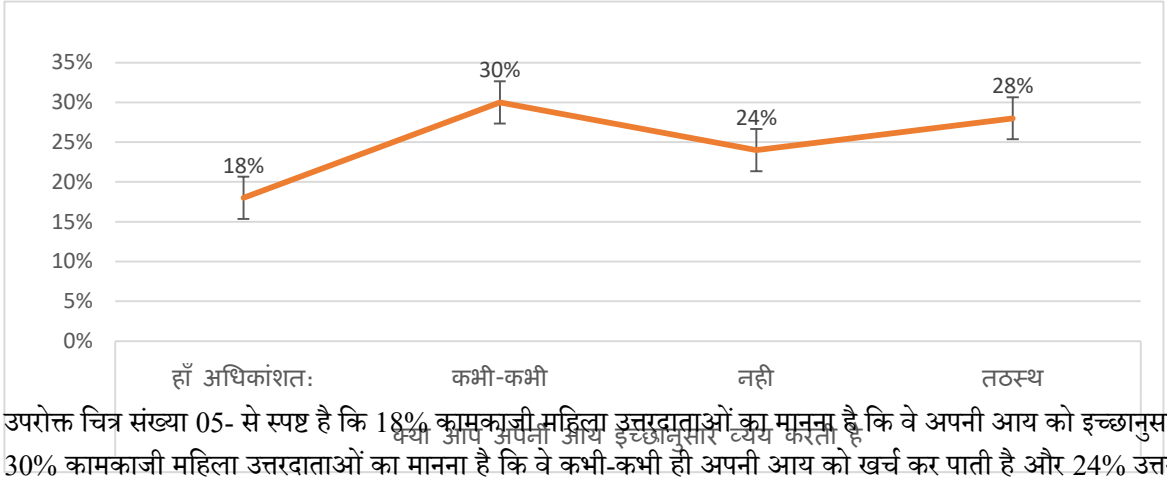

उपरोक्त चित्र संख्या 05- से स्पष्ट है कि 18% कामकाजी महिला उत्तरदाताओं का मानना है कि वे अपनी आय को इच्छानुसार खर्च करती है, 30% कामकाजी महिला उत्तरदाताओं का मानना है कि वे कभी-कभी ही अपनी आय को खर्च कर पाती है और 24% उत्तरदाताओं ने कहा कि वे अपनी आय को खर्च नही कर पाती है जबकि28% तठस्थ थी।

चित्र सं0 06- क्या समाज के दृष्टिकोण में महिलाओं के करियर विकास से सम्बन्धित परिवर्तन लाना चुनौतिपूर्ण कार्य है

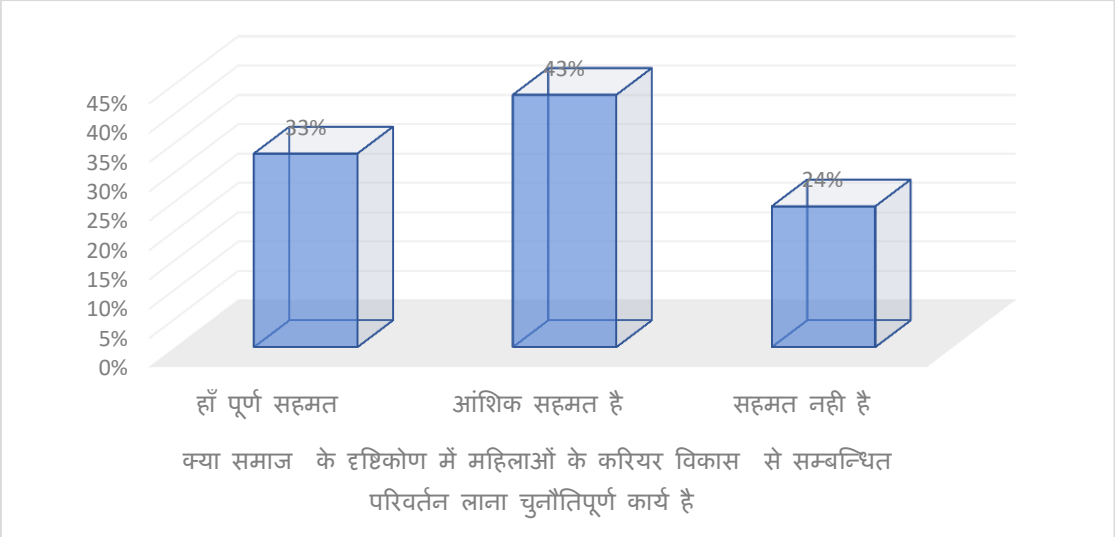

उपरोक्त चित्र संख्या 06- उन कामकाजी महिलाओं के वितरण को प्रदर्शित करती है जिसमें 43% कामकाजी महिला उत्तरदाता आंशिक सहमत है है कि समाज के दृष्टिकोण में महिलाओं के करियर विकास से सम्बन्धित परिवर्तन लाना चुनौतिपूर्ण कार्य है, एवं 33% कामकाजी महिला उत्तरदाता पूर्णरुप से सहमत है कि समाज के दृष्टिकोण में महिलाओं के कॅरियर विकास से सम्बन्धित परिवर्तन लाना चनौतिपूर्ण कार्य है जबकि 24% कामकाजी महिला उत्तरदाता सहमत नही है कि समाज के दृष्टिकोण में महिलाओं के करियर विकास से सम्बन्धित परिवर्तन लाना चुनौतिपूर्ण कार्य है। शायद इस चुनौती का मुख्य कारण है कि प्राचीन काल से ही पुरुषों को स्त्रियों को साड़ी में लीपटी सहमी हुई पुरुषों के इसारे पर आगे-पीछे घुमती हुई, घर के अन्दर रसोई से लेकर बच्चों के पालन-पोषण तक ही देखने की आदत है।

चित्र संख्या 07- क्या रोजगार ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत की है

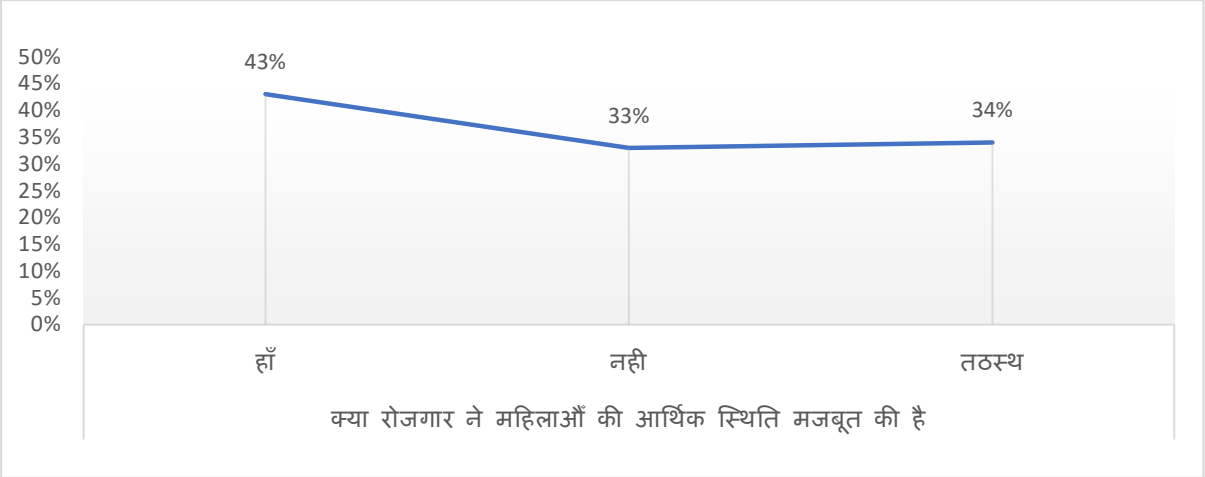

उपरोक्त चित्र संख्या 07- से स्पष्ट है कि सर्वेक्षण में शामिल सबसे अधिक 43 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता का कहना है की रोजगार ने महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत की है, जबकि 33 प्रतिशत तठस्थ है और 34 प्रतिशत ने नही में जबाब दिया है।

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट है कि कार्य में होने बावुजद महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति मजबुत नही हुई है अर्थात् यह किसी न किसी रुप में अभी भी लैंगिक भेदभाव एवं सामाजिक और घरेलु समस्याओं से जुझते हुए दोहरी भूमिका का निर्वहन कर रही है।

चित्र संख्या 08- क्या आप परिवार में मुख्य कार्यों से संम्बन्धित निर्णय लेती है।

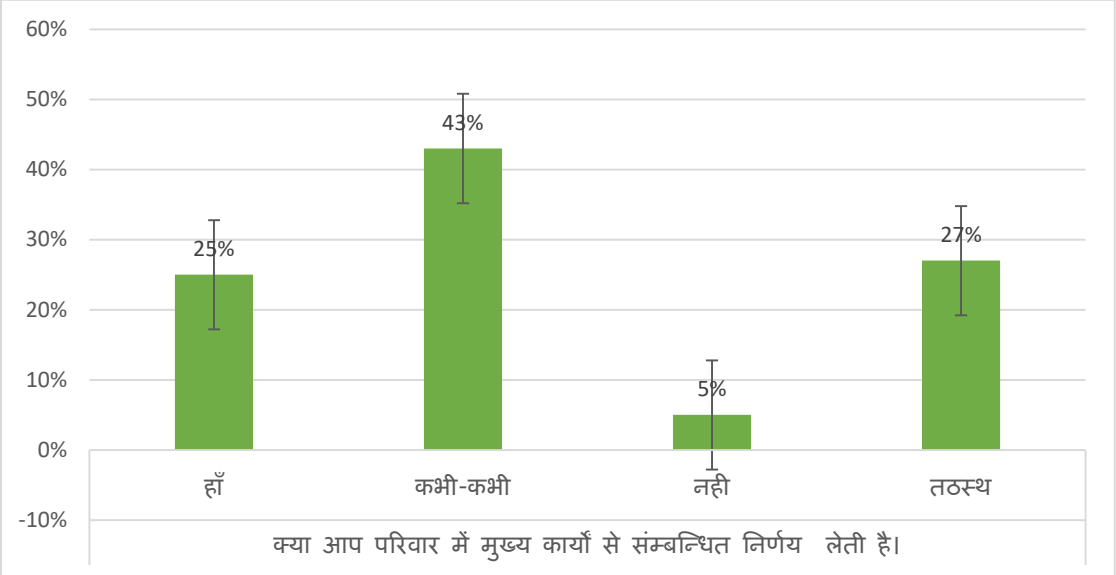

उपरोक्त चित्र संख्या 08- से स्पष्ट है कि कि सर्वेक्षण में शामिल सबसे अधिक 43 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता का कहना है की वे परिवार में मुख्य कार्यों से संम्बन्धित निर्णय लेती है। 27 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता तठस्थ है इन्होने कोई जबाब नही दिया, 25 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता ने कहा कि वे परिवार में मुख्य कार्यों से संम्बन्धित निर्णय लेती है, 5 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता का कहना है की वे परिवार में मुख्य कार्यों से संम्बन्धित निर्णय लेती नही लेती है। विडम्बना है कि रोजगार ने महिलाओं की सामाजिक स्थिति मजबूत नही की है।

चित्र संख्या 09- क्या आप दोहरी भूमिका का भी निर्वहन करती है

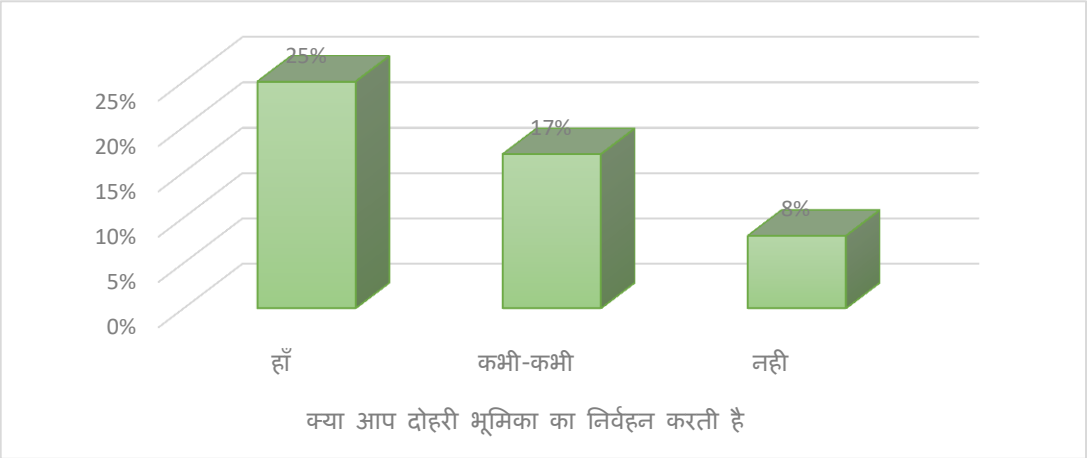

उपरोक्त चित्र संख्या 09- से स्पष्ट है कि कि सर्वेक्षण में शामिल सबसे अधिक 25 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता का कहना है की वे दोहरी भूमिका का भी निर्वहन करती है, 17 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता ने कहा कि वे कभी-कभी दोहरी भूमिका का भी निर्वहन करती है और 8 प्रतिशत कामकाजी महिला उत्तरदाता ने कहा का कि वे दोहरी भूमिका का निर्वहन नही करती है।

चित्र संख्या 10- आपके समक्ष उत्पन्न होने वाली सामाजिक और पारिवारिक चुनौतियाँ कौन सी है।

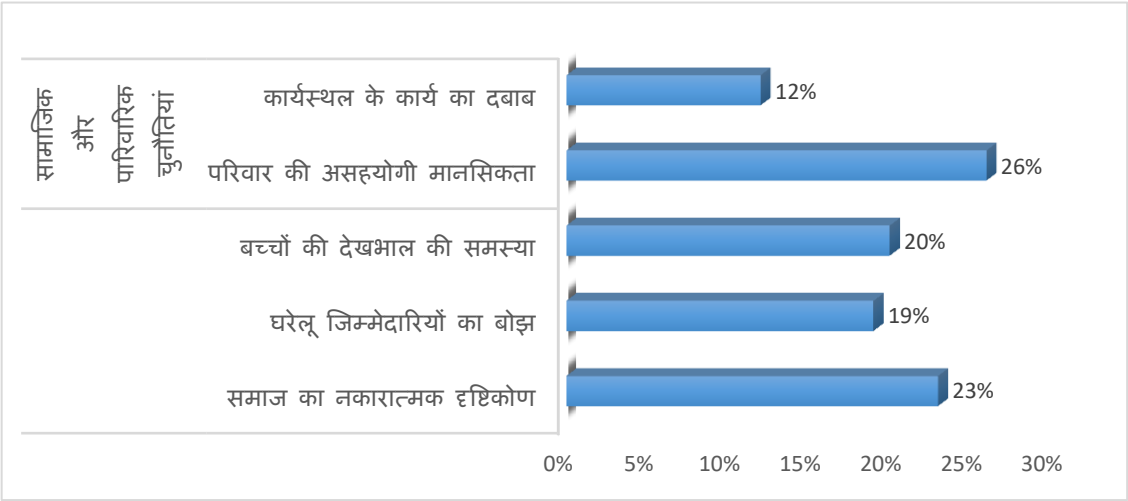

उपरोक्त चित्र संख्या 10- से स्पष्ट है कि साक्षात्कार में शामिल सबसे अधिक कामकाजी महिला उत्तरदाता का कहना है की उनके समक्ष उत्पन्न होने वाली सामाजिक और आर्थिक चुनौतियो, परिवार की असहयोगी मानसिकता समाज का नकारात्मक दृष्टिकोण, घरेलू जिम्मेदारियों का बोझ बच्चों की देखभाल की समस्या कार्यस्थल के कार्य का दबाब सामाजिक और पारिवारिक चुनौतियाँ है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष से स्पष्ट है कि कामकाजी महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति अभी भी संतोषजनक नहीं है। क्योंकि वे विभिन्न तरीकों से होने वाली सामाजिक और पारिवारिक नकारात्मक दृष्टिकोण एवं व्यवहार से पूरी तरह मुक्त नहीं हैं। चाहे वह संगठित क्षेत्र की हो या असंगठित या फिर स्वरोजगार करने वाली कामकाजी महिला। ये 21वीं सदी में भी पुरुष प्रधान सामाज व घरेलु राजनीति के चक्रव्यू का शिकार हो रही है।

संदर्भ सूची

1. वर्मा,ज्. (2025) "भारत में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक-आर्थिक स्थिति: समस्या व समाधान", eISSN 2583-6986Volume04,Issue 07,

2. भारत के विकास में महिलाओं की भूमिका(2025), https:/www.drishtiias.com/hindi/daily-updates/daily-news-editorials/role-of-women-in-indias-growth-story,

3. कुमारी, वा.और कुमारी, स्. (2024), वर्तमान में वैज्ञानिक महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन, इंट जे होम साइंस, खंड10(2):150-154,

4. कुमारी, सं. (2020) कामकाजी महिलाएं समस्या एवं समाधान वर्तमान परिवेश के संदर्भ में, शोधार्थी, जे पी.विश्वविद्यालय, छपरा, बिहार, भारत, इंटरनेशनल जरनल ऑफ़ अप्लाइड रिसर्च, ISSN : 2394- 7500,

5. नागर,आ. (2021) भारत में कामकाजी महिलाओं की समस्या में समाधान एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, सहायक आचार्य, राजकीय महाविद्यालय देवली, टोंक राजस्थान, भारत इनोवेशन दी रिसर्च कांसेप्ट ISSN: 2456-5474,

6. कुमारी, श्. एवं कुमारी, स्. (2024) परिप्रेक्ष्य में कामकाजी महिलाओं की सामाजिक व आर्थिक स्थिति का अध्ययन" Int J Home Sci,10(2):150-154.

7. प्रसाद, चं. (2018) "कामकाजी महिलाओं की सामाजिक और आर्थिक स्थिति एक समाजशास्त्रीय अध्ययन,(पटना शहर के विशेष संदर्भ में)", *ASVPR.* ISSN NO.-2347-2944,Vol.-9, No.-II,

8. Batar, s. (2021) Women dual role:sociological perspective, *EEO*,vol- 20,Issue 1,pp. 1766-1772.